नईदुनिया

संपादकीय

घाटी में लोकतंत्र बहाल

केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में चुनाव के बाद आए एग्जिट पोल में त्रिशंकु विधानसभा के कयास लगाए जा रहे थे। लेकिन जब मंगलवार को चुनाव परिणाम सामने आए तो जम्मू-कश्मीर के मतदाताओं ने स्पष्ट जनादेश दिया। चुनावों में नेशनल कॉन्फ्रेंस व कांग्रेस गठबंधन को निर्णायक जीत मिली है। निश्चय ही पांच साल पुराने इस केंद्र शासित प्रदेश के लिये यह एक नई शुरुआत है। जम्मू-कश्मीर में दस साल बाद हुए विधानसभा चुनावों में मतदाताओं ने खंडित जनादेश देने के बजाय एक स्थिरता को चुना। उन्होंने राजनीतिक जोड़-तोड़ की किसी भी संभावना को खारिज कर दिया, जैसा कि एग्जिट पोल में त्रिशंकु विधानसभा के कयास लगाए जा रहे थे। इस बीच उपराज्यपाल द्वारा नियुक्त होने वाले पांच विधायकों का सवाल भी उठा, जिनके पास मतदान का अधिकार होगा। बहरहाल, अब विजयी गठबंधन और केंद्र सरकार के लिये असली परीक्षा की शुरुआत हो रही है। इसमें सत्ता सौंपने के लिये बातचीत की प्रक्रिया भी शामिल होगी। जनादेश के बाद केंद्रशासित प्रदेश में विश्वास बहाली प्राथमिकता होनी चाहिए ताकि उपराज्यपाल व निर्वाचित सरकार के बीच किसी तरह का टकराव पैदा न हो। भरोसा किया जाना चाहिए कि जनादेश का सम्मान किया जाएगा। हम उम्मीद करें कि अतीत की अप्रिय स्थितियों की छाया वर्तमान लोकतांत्रिक प्रक्रिया पर नजर नहीं आएगी। आशा की जानी चाहिए कि पूर्ववर्ती राज्य के दौरान हिंसा, क्षेत्रीय विभाजन, सांप्रदायिक तनाव व अलगाव की धारणाएं अतीत की बातें बन जाएं। वे नए जनादेश की आगे की यात्रा में बाधक नहीं बनेंगी। हालिया चुनाव के दौरान मतदाताओं के उत्साह व लोकतांत्रिक अभिव्यक्ति ने सुखद अहसासों को पुष्ट किया है। अच्छी बात है कि क्षेत्र में लंबे समय बाद चुनाव बहिष्कार और चुनावी प्रक्रिया के प्रति अवमानना का साया हट गया है। चुनाव अभियान के दौरान मतदाताओं की उत्साहपूर्ण भागीदारी ने आशा जगायी है कि घाटी में लोकतांत्रिक परंपराएं समृद्ध होंगी। भारतीय संघ के हिस्से के रूप में जम्मू-कश्मीर में स्वस्थ लोकतांत्रिक परंपरा सशक्त हो, यह प्रयास केंद्र सरकार की तरफ से लगातार होना ही चाहिए।

यह अच्छी बात है कि केंद्रशासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में अनुच्छेद 370 की समाप्ति के बाद अब स्थितियां सामान्य हुई हैं। पिछले लोकसभा चुनाव के दौरान भी मतदाताओं ने उत्साह से मतदान में भाग लिया था। वैसा ही उत्साह इस विधानसभा चुनाव के दौरान भी देखा गया। यह अच्छा है कि जम्मू-कश्मीर में जिस त्रिशंकु विधानसभा के कयास लगाए जा रहे थे, वास्तविकता ठीक उसके विपरीत रही। जम्मू-कश्मीर के मतदाताओं ने एक तरह से पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी को सिरे से खारिज कर दिया। यहां तक कि पीडीपी सुप्रीमो महबूबा मुफ्ती की बेटी भी चुनाव हार गई। भाजपा को जम्मू में जरूर बढ़त मिली मगर घाटी में वह खाता नहीं खोल सकी। जिसको लेकर सवाल उठाये जा रहे हैं। लेकिन दूसरी ओर नेशनल कान्फ्रेंस व कांग्रेस ने मिलकर पूर्ण बहुमत से अधिक सीटें जीत ली हैं। बहरहाल, नई सरकार बनाने के लिये मतदाताओं द्वारा दिए गए संदेश को संवेदनशील ढंग से समझने की जरूरत है। जरूरत इस बात की है कि राजनीतिक तकरार से हटकर कोशिश कश्मीरी जनमानस के मन को पढ़ने की हो। ध्यान रखा जाए कि वहां के लोग वास्तव में क्या चाहते हैं। निश्चित रूप से जम्मू-कश्मीर के लोग शेष देश की तरह महंगाई व बेरोजगारी की समस्या से दो चार हैं। उनकी समस्याओं का तार्किक समाधान तलाशना चाहिए। इस सीमावर्ती क्षेत्र की संवेदनशीलता का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए। उन्हें वे हक दिए जाने चाहिए जो उनके जीवन में सुधार लाने में सहायक बन सकें। निश्चित रूप से अनुभवी राजनीतिक पार्टियों नेशनल कान्फ्रेंस व कांग्रेस के गठबंधन के लिये लिये सत्ता की बागडोर संभालना कोई नई बात नहीं है। लेकिन उन्हें इस क्षेत्र की बदली हुई आवश्यकताओं को पहचानना होगा। निश्चित रूप से अब गलतियों की पुनरावृत्ति की कोई गुंजाइश नहीं होनी चाहिए। केंद्र सरकार को स्वीकारना चाहिए कि इस केंद्र शासित प्रदेश में राज्य बहाली की मांग एक वैध जन आकांक्षा है। लेकिन इसे राजनीतिक बयानबाजी से परे रखना होगा। साथ ही सामाजिक एकजुटता और आर्थिक समृद्धि के लिये काम करना होगा। जिससे घाटी के लोग देश की मुख्यधारा से जुड़ सकें।

शक्ति-पूजा का पर्व है दशहरा

रमेश सर्राफ धमोरा

भारतीय संस्कृति वीरता की पूजक व शौर्य की उपासक है। व्यक्ति और समाज के रक्त में वीरता प्रकट हो इसलिए दशहरे का उत्सव रखा गया है। भारत कृषि प्रधान देश है। जब किसान अपने खेत में फसल उगाकर अनाज घर लाता है तो उसके उल्लास और उमंग का पारावार नहीं रहता। इस प्रसन्नता के लिये वह भगवान की कृपा को मानता है और उसे प्रकट करने के लिए उनका पूजन करता है। भारतवर्ष में यह पर्व विभिन्न प्रदेशों में विभिन्न प्रकार से मनाया जाता है।

दशहरा शब्द हिंदी के दो शब्दों दस और हारा से मिलकर बना है। जहां दस गणित के अंक दस (10) और हारा शब्द पराजित का सूचक है। इसलिए यदि इन दो शब्दों को जोड़ दिया जाए तो दशहरा बनता है। जो उस दिन का प्रतीक है जब दस सिर वाले दुष्ट रावण का भगवान राम ने वध किया था। दशहरा अथवा विजयदशमी पर्व को भगवान राम की विजय के रूप में मनाया जाए अथवा दुर्गा पूजा के रूप में। दोनों ही रूपों में यह शक्ति-पूजा का पर्व है। शस्त्र पूजन की तिथि है। हर्ष और उल्लास तथा विजय का पर्व है।

दशहरा भारत के सबसे महत्वपूर्ण त्योहारों में से एक है। इसी दिन भगवान राम ने बुराई के प्रतीक दस सिर वाले रावण का संहार किया था तो देवताओं को हराकर स्वर्ग पर अधिकार करने वाले महिषासुर का 10 दिन तक चले भयंकर युद्ध के बाद मां दुर्गा ने वध किया था। इसीलिये इसको विजयादशमी के नाम से जाना जाता है।

अश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को इसका आयोजन होता है। इसे असत्य पर सत्य की विजय के रूप में मनाया जाता है। इसी दिन लोग नया कार्य प्रारम्भ करते हैं। इस दिन शस्त्र-पूजा की जाती है। इस दिन जगह-जगह मेले लगते हैं। रामलीला का समापन होता है। रावण का विशाल पुतला बनाकर उसे जलाया जाता है।

कर्नाटक में मैसूर का दशहरा भी पूरे भारत में प्रसिद्ध है। मैसूर में दशहरे के समय पूरे शहर की गलियों को रोशनी से सज्जित किया जाता है और हाथियों का श्रृंगार कर पूरे शहर में भव्य जुलूस निकाला जाता है। इस समय प्रसिद्ध मैसूर महल को दीपमालाओं से दुल्हन की तरह सजाया जाता है। इसके साथ शहर में लोग टार्च लाइट के संग नृत्य और संगीत की शोभायात्रा का आनंद लेते हैं। पंजाब में दशहरा नवरात्रि के नौ दिन का उपवास रखकर मनाते हैं। इस दौरान यहां आगंतुकों का स्वागत पारम्परिक मिठाई और उपहारों से किया जाता है। यहां भी रावण-दहन के आयोजन होते हैं व मैदानों में मेले लगते हैं।

हिमाचल प्रदेश में कुल्लू का दशहरा बहुत प्रसिद्ध है। अन्य स्थानों की ही भांति यहां भी दस दिन अथवा एक सप्ताह पूर्व इस पर्व की तैयारी आरंभ हो जाती है। स्त्रियां और पुरुष सभी सुंदर वस्त्रों से सज्जित होकर ढोल, नगाड़े, बांसुरी आदि वाद्य यंत्रो को लेकर बाहर निकलते हैं। पहाड़ी लोग अपने ग्रामीण देवता का धूम धाम से जुलूस निकाल कर पूजन करते हैं। देवताओं की मूर्तियों को बहुत ही आकर्षक पालकी में सुंदर ढंग से सजाया जाता है। साथ ही वे अपने मुख्य देवता रघुनाथ जी की भी पूजा करते हैं। इस जुलूस में प्रशिक्षित नर्तक नटी नृत्य करते हैं। इस प्रकार जुलूस बनाकर नगर के मुख्य भागों से होते हुए नगर परिक्रमा करते हैं और कुल्लू नगर में देवता रघुनाथजी की वंदना से दशहरे के उत्सव का आरंभ करते हैं। दशमी के दिन इस उत्सव की शोभा निराली होती है।

महाराष्ट्र में नवरात्रि के नौ दिन मां दुर्गा को समर्पित रहते हैं जबकि दसवें दिन ज्ञान की देवी सरस्वती की वंदना की जाती है। इस दिन विद्यालय जाने वाले बच्चे अपनी पढ़ाई में आशीर्वाद पाने के लिए मां सरस्वती के तांत्रिक चिह्नों की पूजा करते हैं। किसी भी चीज को प्रारंभ करने के लिए खासकर विद्या आरंभ करने के लिए यह दिन काफी शुभ माना जाता है। महाराष्ट्र के लोग इस दिन विवाह, गृह-प्रवेश एवं नये घर खरीदने का शुभ मुहूर्त समझते हैं। महाराष्ट्र में इस अवसर पर सिलंगण के नाम से सामाजिक महोत्सव के रूप में भी इसको मनाया जाता है।

छत्तीसगढ़ के बस्तर में दशहरे को मां दंतेश्वरी की आराधना को समर्पित पर्व मानते हैं। दंतेश्वरी माता बस्तर अंचल के निवासियों की आराध्य देवी हैं जो दुर्गा का ही रूप हैं। यहां यह पर्व पूरे 75 दिन चलता है। यहाँ दशहरा श्रावण मास की अमावस से आश्विन मास की शुक्ल त्रयोदशी तक चलता है। बस्तर में यह समारोह लगभग 15वीं शताब्दी से शुरु हुआ था। इसका समापन अश्विन शुक्ल त्रयोदशी को ओहाड़ी पर्व से होता है।

गुजरात में मिट्टी सुशोभित रंगीन घड़ा देवी का प्रतीक माना जाता है और इसको कुंवारी लड़कियां सिर पर रखकर एक लोकप्रिय नृत्य करती हैं जिसे गरबा कहा जाता है। गरबा नृत्य इस पर्व की शान है। पुरुष एवं स्त्रियां दो छोटे रंगीन डंडों को संगीत की लय पर आपस में बजाते हुए घूम घूम कर नृत्य करते हैं। इस अवसर पर भक्ति, फिल्म तथा पारम्परिक लोक-संगीत सभी का समायोजन होता है। पूजा और आरती के बाद डांडिया रास का आयोजन पूरी रात होता रहता है। नवरात्रि में सोने और गहनों की खरीद को शुभ माना जाता है।

बंगाल, ओडिशा और असम में यह पर्व दुर्गा पूजा के रूप में ही मनाया जाता है। यह बंगालियों, ओडिया, और आसमिया लोगों का सबसे महत्वपूर्ण त्योहार है। बंगाल में दशहरा पूरे पांच दिनों के लिए मनाया जाता है। ओडिशा और असम मे चार दिन तक त्योहार चलता है। यहां देवी दुर्गा को भव्य सुशोभित पंडालों में विराजमान करते हैं। देश के नामी कलाकारों को बुलवा कर दुर्गा की मूर्ति तैयार करवाई जाती हैं। इसके साथ अन्य देवी द्वेवताओं की भी कई मूर्तियां बनाई जाती हैं।

यहां दशमी के दिन विशेष पूजा का आयोजन किया जाता है। प्रसाद चढ़ाया जाता है और प्रसाद वितरण किया जाता है। पुरुष आपस में आलिंगन करते हैं जिसे कोलाकुली कहते हैं। स्त्रियां देवी के माथे पर सिंदूर चढ़ाती हैं व देवी को अश्रुपूरित विदाई देती हैं। इसके साथ ही वे आपस में भी सिंदूर लगाती हैं व सिंदूर से खेलती हैं। इस दिन यहां नीलकंठ पक्षी को देखना बहुत ही शुभ माना जाता है। अन्त में देवी प्रतिमाओं को विसर्जन के लिए ले जाया जाता है। मूर्ति विसर्जन यात्रा बड़ी दर्शनीय होती है।

कश्मीर के अल्पसंख्यक हिन्दू नवरात्रि के पर्व को श्रद्धा से मनाते हैं। परिवार के सारे वयस्क सदस्य नौ दिनों तक उपवास करते हैं। अत्यंत पुरानी परम्परा के अनुसार नौ दिनों तक लोग माता खीर भवानी के दर्शन करने के लिए जाते हैं। ऐसा माना जाता है कि आश्विन शुक्ल दशमी को तारा उदय होने के समय विजय नामक मुहूर्त होता है। यह काल सर्वकार्य सिद्धिदायक होता है। इसलिए भी इसे विजयादशमी कहते हैं।

दशहरा पर शास्त्र-शस्त्रों के पूजन पर आरएसएस का नजरिया कितना सही!

डॉ. मयंक चतुर्वेदी

भारत में अनादि काल से परम्परागत शस्त्र, शास्त्र और शक्ति पूजन हो रहा है। हमारी यह परंपरा शास्त्रों के साथ शस्त्र पूजन और विधिवत शक्ति आराधना के लिए प्रेरित करती है। महाकवि निराला के मन और हृदय से जब राम की शक्ति पूजा कविता प्रस्फुटित हो रही होगी, तब निश्चित ही उन्हें अपनी इसी परंपरा का ही स्मरण रहा होगा। निराला जब इस कविता को लिख रहे थे, तब कोई सामान्य भावभूमि नहीं रही होगी, वह विशेष थी, राम की शक्ति पूजा अंधकार से होकर प्रकाश में आने की कविता है। राम कथा इस देश की सबसे लोकप्रिय कथा है, इसलिए वे इसे अपनी कविता के कथानक के लिए चुनते हैं, यह युद्ध सामान्य युद्ध नहीं है। यह राम-रावण का युद्ध रामत्व अर्थात् सत्य के पक्ष में युद्ध है। आपको हर वक्त कोई रावण मिलेगा और उससे संघर्ष करता हुआ सुविचार श्रीराम के रूप में मिलता है। इस युद्ध में निराला की जो सबसे बड़ी चिंता रही और जिसकी ओर वे सभी का ध्यान आकर्षित करते हैं, वह यह कहना है, अन्याय जिधर है उधर शक्ति, अत: वे अपना सर्वस्व शक्ति के लिए समर्पित कर देने की बात कहते हैं। वैसे भी देवी दुर्गासप्तसती में कहती भी हैं –

यो मां जयति संग्रामे यो में दर्प व्योपहति।
यो में प्रतिबलो लोके स मे भर्ता भविष्यति।। (श्रीदुर्गासप्तशती,पञ्चमोऽध्याय:, श्लोक120)

अर्थात् जो मुझे संग्राम में जीत लेगा, जो मेरे अभिमान को चूर्ण कर देगा और संसार में जो मेरे समान बलवान होगा, वही मेरा स्वामी होगा इसका संदेश साफ है जो शक्ति सम्पन्न है, मां शक्ति की कृपा भी उसी ओर है। शक्ति अच्छा-बुरा नहीं देखती, वह आपकी सामर्थ्य देखती है कि आप उसके ताप को सहन करने में सक्षम हैं कि नहीं । निराला श्रीराम के मुख से कहलवाते भी हैं कि अन्यायी शक्तियाँ काफी संगठित है, इसलिए हमें सज्जन शक्ति को एकत्र आना है। वस्तुत: राम की व्यथा ही मानव मन की व्यथा है, जोकि सत्य के मार्ग पर चलते हुए धर्म की जय होते देखना चाहती है। यहां राम को जाम्वन्त की सलाह काम आती है, वे कहते हैं–

हे पुरुष-सिंह, तुम भी यह शक्ति करो धारण,
आराधन का दृढ़ आराधन से दो उत्तर,
तुम वरो विजय संयत प्राणों से प्राणों पर;
रावण अशुद्ध होकर भी यदि कर सका त्रस्त
तो निश्चय तुम हो सिद्ध करोगे उसे ध्वस्त,
शक्ति की करो मौलिक कल्पना, करो पूजन,
छोड़ दो समर जब तक न सिद्धि हो, रघुनंदन! (कविता- राम की शक्ति-पूजा)

और उसके बाद हम देखते हैं कि परिस्थितियां पलट चुकी होती हैं। भगवान श्रीराम शक्ति की आराधना करते हैं, उसके बाद वे शक्ति को अपने साथ खड़ा पाते हैं।

वस्तुत: देखा जाए तो मां भगवती की आराधना के नौ दिन और इन नौ दिनों में नित्य प्रति शास्त्रों का पठन, मां भगवती के पूजन के साथ ही उनके हाथों में विराजमान विविध शस्त्रों का पूजन हर सनातनी हिन्दू विधि विधान से करते हैं और उसके बाद अंतिम दसवें दिन दशहरे पर अस्त्र-शस्त्रों का व्यापक स्तर पर सामूहिक पूजन करने की परंपरा हमारे समाज में सदियों से चली आ रही है। जिसके पास जो है यथाशक्ति छुरी, तलवार, गड़सा, धनुष-बाण, पिस्तौल, बंदूक या अन्य कुछ भी जो हमारी रक्षा करने में सहायक हो सकता है वह कोई भी अस्त्र हम विधि विधान से दशहरे पर उसका पूजन करते हैं । साथ ही जिन घरों में विद्या अध्ययन की परंपरा है और जो व्यापार से जुड़े हैं वे शस्त्रों के साथ अपने ग्रंथों व तराजू की पूरा करना नहीं भूलते। वस्तुत: इस संदर्भ में परंपरा हमें यही कहती है कि जो हमें आगे बढ़ाने में सहायक हैं, वे हमारे सच्चे मित्र शस्त्र, शास्त्र और सामूहिक समाज की शक्ति है, जिसे हम देवी रूप में पूजते हैं । शस्त्रों की पूजा से परंपरा यह संकेत करती है कि जो शक्तिशाली है उसी के सभी मित्र हैं, कमजोर का कोई मित्र नहीं । कई उदाहरण भी हमारे सामने इस संदर्भ में मौजूद हैं । संभवत: यही कारण रहा कि हमारे ऋषि-मुनि अरण्यों में रहने के बाद भी शास्त्र के साथ शस्त्र की शिक्षा देते रहे। उनकी परा और अपरा विद्या भी शस्त्र और शास्त्र से मुक्त नहीं है।

शस्त्र और शास्त्र आपके आत्मिक बल को संवर्धित करनेवाले हैं। अथर्ववेद में कहा ही गया है, 'पाशविक बल से कई गुना अधिक शक्तिवान आत्मिक बल होता है। ये आत्मिक बल जितने परिमाण से बढ़ेगा, उतने ही परिमाण से शत्रु के पाशविक बल घटेंगे।' उदाहरण प्रत्यक्ष है-रावण जब पाशविक शस्त्रों से सुसज्जित होकर रथहीन श्रीराम के सामने पहुँचा तब विभीषण से श्रीराम ने कहा- जिसके रथ के पहिये शौर्य तथा धैर्य हैं, सत्य और शील ध्वजा पताका हैं, बुद्धि प्रचंड शक्ति है, श्रेष्ठ विज्ञान कठिन धनुष हैं, अचल मन तरकस है, ज्ञानी गुरु का आशीर्वाद रूप कवच है इसके समान विजय उपाय न दूजा, इसलिए ही अंत में विजय श्रीरामजी की ही होती है।

इसी तरह से ऋग्वेद में आज्ञा दी गई है कि जो मायावी, छली, कपटी अर्थात् धोखेबाज है, उसे छल, कपट अथवा धोखे से मार देना चाहिए। मायाभिरिन्द्रमायिनं त्वं शुष्णमवातिर:। ।1।11।6।

हे इन्द्र! जो मायावी, पापी, छली तथा जो दूसरों को चूसने वाले हैं, उनको तुम माया से मार दो।

फिर महापण्डित विदुर ने जो लिखा वह भी ध्यान देने योग्य है। वे कहते हैं –

कृते प्रतिकृतिं कुर्याद्विंसिते प्रतिहिंसितम् । तत्र दोषं न पश्यामि शठे शाठ्यं समाचरेत् ॥ (महाभारत विदुरनीति)

अर्थात, जो आपके साथ जैसा बर्ताव करें उसके साथ वैसा ही करिए, हिंसा करने के वालों के साथ हिंसक रूप में ही आचरण करें, इसमें कोई दोष नहीं । छल करनेवालों को छल से ही मार दो । जैसे महाभारत में श्री कृष्ण ने गदा युद्ध के अवसर पर भीम को यही मंत्रणा दी थी कि है भीम छल कपट से दुर्योधन को मारो, क्योंकि वह इसी योग्य है। भगवान श्रीकृष्ण कहा भी है-

ये हि धर्मस्य लोप्तारो वध्यास्ते मम पाण्डव।
धर्म संस्थापनार्थं हि प्रतिज्ञैषा ममाव्यया॥
(महाभारतम् -7.156.28)

(हे पाण्डव! मेरी निश्चित प्रतिज्ञा है कि धर्म की स्थापना के लिए मैं उन्हें मारता हूं, जो धर्म का लोप (नाश) करने वाले हैं।) वेद में आदेश है की हमें प्रचंड शस्त्रों का अवश्य ही संग्रह करना चाहिए परन्तु इसके साथ ही अपराजेय चारित्रिक, मानसिक और आत्मिक बल का भी संचय करना चाहिए जैसा अर्जुन और भगवान श्रीराम ने किया था । शक्ति आराधना के पर्व नवरात्री के पश्चात आने वाला विजयादशमी का पर्व विजयोत्सव के साथ जुड़ा हुआ है।

आजकल

रिजर्व बैंक ने रेपो दर को रखा स्थिर

भारतीय रिजर्व बैंक ने फिर अपनी मौद्रिक नीति में कोई बदलाव करने से परहेज किया है। दसवीं बार रेपो दर को यथावत रखा गया है। फिलहाल वह साढ़े छह फीसद है। यह फैसला महंगाई पर काबू पाने के मकसद से किया गया है। रिजर्व बैंक ने अगले दो वित्त वर्षों में महंगाई के चार फीसद से ऊपर रहने का अनुमान लगाया है। नई मौद्रिक नीति की घोषणा करते हुए चालू वित्त वर्ष में सकल घरेलू उत्पाद की पहले की अनुमानित दर को कम किया गया है। स्वाभाविक ही रिजर्व बैंक के कदम अभी ठिठके हुए हैं।

रिजर्व बैंक का मानना है कि अगर महंगाई को चार फीसद से नीचे लाकर स्थिर करने में कामयाबी मिल जाती है, तो विकास दर दहाई के आंकड़े को छू सकती है। हालांकि दुनिया में जिस तरह के हालात हैं और बहुत सारे देश मंदी की मार झेल रहे हैं, उसमें भारत की अर्थव्यवस्था ने अपने को संभाल रखा है। यहां मंदी के झटके उस तरह नहीं लगे, जैसे कई विकसित कहे जाने वाले देशों में भी देखने को मिले। इस वक्त भारत दुनिया की तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था है। ऐसे में रिजर्व बैंक ब्याज दरों में किसी भी तरह का परिवर्तन कर कोई जोखिम नहीं उठाना चाहता।

यह ठीक है कि रेपो दर में कोई बदलाव न होने से कर्ज लेकर घर, वाहन आदि खरीदने वालों पर किस्त चुकाने का बोझ नहीं बढ़ेगा। मगर हकीकत यह है कि फिलहाल रेपो दर अपने उच्च स्तर पर है। रेपो वह दर होती है, जिस पर रिजर्व बैंक दूसरे बैंकों को कर्ज देता है। इस तरह बुजुर्गों आदि को अपने बचत खाते की जमा राशि पर कुछ अधिक ब्याज मिल रहा है। मगर जिन लोगों ने कर्ज लिया हुआ है, उन पर पहले की तुलना में किस्तें बढ़ा कर चुकानी पड़ रही हैं। करीब दो वर्ष पहले जब खुदरा महंगाई बढ़ कर सात फीसद के आसपास पहुंच गई थी, तब रिजर्व बैंक ने रेपो दरें बढ़ानी शुरू की थी। थोड़े-थोड़े समय बाद छह बार रेपो दर में बढ़ोतरी की गई और वह ढाई फीसद तक बढ़ गई। इससे आंकड़ों में महंगाई पर अंकुश तो लगता दिखा, पर लोगों पर किस्तों का बोझ भी बढ़ गया। लंबे समय से अपेक्षा की जा रही है कि रिजर्व बैंक रेपो दर में कुछ कटौती करेगा, ताकि व्यवसायियों और नौकरी-पेशा लोगों को मकान, दुकान, वाहन आदि के कर्ज का बोझ कुछ कम हो। मगर रिजर्व बैंक फूंक-फूंक कर कदम रख रहा है।

गांव-गरीब, किसान-मजदूर की आवाज बुलंद करने के लिए चौखम्भा राज की संकल्पना

राममनोहर लोहिया की पुण्यतिथि (12 अक्टूबर) पर विशेष

डॉ. लोकेश कुमार

समाजवादी चिंतक और स्वतंत्रता सेनानी डॉ. राममनोहर लोहिया की पुण्यतिथि 12 अक्टूबर को मनाई जाती है। उनका चिंतन था कि हर पांच साल में यदि सरकार ठीक काम नहीं कर रही है तो उसे बदल देनी चाहिए। इसके बारे में तर्क देते हुए कहते थे कि जिस प्रकार हम रोटी की एक तरफ से सिकाई करेंगे तो वह जल जाएगी। रोटी को दोनों तरफ से सिकाई करेंगे, तब ही रोटी खाने योग्य बन सकेगी। इसी प्रकार हमें भी सही काम नहीं करने वाली सरकार को पांच साल में बदल कर उनके कार्यों की समीक्षा करनी चाहिए।

उन्होंने गांव, गरीब, किसान, मजदूर की आवाज को बुलंद करने के लिए चौखम्भा राज की संकल्पना दी। चौखम्भा राज योजना की स्थापना के लिए संघर्ष कर डॉ. लोहिया ने महात्मा गांधी के ग्राम स्वराज्य के स्वप्न को साकार करने का भी प्रयास किया। डॉ. लोहिया सबके लिए सम्मानजनक जीवन का लक्ष्य प्राप्त करना चाहते थे। उपभोगवाद, पूंजीवाद और साम्यवादी मूल्य का वे विरोध करते थे, लेकिन साधु-महात्माओं की तरह लंगोटी पहन कर रहें, यह भी उन्हें पसंद नहीं था। चौखम्भा राज की कल्पना सारी राज्य-व्यवस्था को चार स्तरों पर विकेंद्रित करने की थी। वे कहा करते थे कि गांवों की पंचायतें देश की संसद का स्थान लें। चौखम्भा राज में भारतीय परिवेश, भारतीय संस्कार, भारतीय परम्परा को बनाए रखेगा। उनका चिंतन था कि राज्य की शक्ति तोड़कर केन्द्र और प्रांत के अलावा, जिले और गांव में बांट दी जानी चाहिए। केन्द्र और प्रांत में उतनी शक्ति रहे, जितनी आवश्यक हो, जैसे पलटन केन्द्र में और हथियार बंद पुलिस प्रांत में और जहां तक संभव हो अधिक से अधिक शक्ति जिला और गांव में रहे। पुलिस जिले में और सारे विकास कार्य गांव में।

चौखम्भा राज साम्यवादी तानाशाही का जवाब था। 'राज लक्ष्मी' जो अभी केन्द्र और प्रांतों तक ही सीमित थी, उसे जिले और गांव में ले जाकर बिठाया जाए। चौखम्भा राज 'ग्राम स्वराज' का पर्याय नहीं है। पुरानी पंचायत व्यवस्था के चलते गांवों में जड़ताएं बनी रहेंगी। उन्हें सादगी के नाम पर निर्धनता का महिमामंडन भी पसंद नहीं था। डॉ. लोहिया का कहना था कि चौखम्भा राज में केन्द्र के पास जो राजस्व इकट्ठा होता है, उसका एक भाग ग्राम को, दूसरा भाग जिले के पास, तीसरा भाग प्रांत को और चौथा भाग केन्द्र को प्राप्त होना चाहिए। ताकि प्रत्येक इकाई अपने-अपने कार्यों का सही ढंग से सम्पादन कर सके। उनका मत था कि चौखम्भा राज क्षेत्रवाद और गुटबंदी के मुद्दों से परे होगा। यह एक ऐसी संरचना है, जिसमें सरकार या समाज के किसी गुट को संकीर्ण स्वार्थ का मौका नहीं मिलेगा, क्योंकि यह ऐसा प्रारूप प्रस्तुत करता है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति, किसी भी स्तर पर गुटबंदी द्वारा की जाने वाली शक्ति जन संगठनों में बिखरी हुई होती है, जहां प्रत्येक व्यक्ति की अपनी एक प्रमुख भूमिका होती है। अत: गुटबंदी का प्रश्न नहीं उठता।

लोहिया के मत में चौखम्भा राज जनता की अकर्मण्यता समाप्त कर भ्रष्ट व बोझिल व्यवस्था से उसको मुक्त करता है। यह राज्य जनतंत्र की रूपरेखा में हमदर्दी और बराबरी का रंग भरता है। उनका मत था कि प्रत्येक सामान्य जन को आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक ढंग से सबल बनाए जाने से चौखम्भा राज की कल्पना साकार हो सकती है। समग्र दर्शन सामान्य जन के सर्वांगीण विकास की ओर उन्मुख है। वर्तमान पंचायत प्रणाली औपचारिक विकेन्द्रीकरण है। इसमें सत्ता और साधनों का वास्तविक विकेन्द्रीकरण नहीं होता। पंचायतों के चुनाव होते हैं और उन्हें कुछ पूंजी साधन भी उपलब्ध कराए जाते हैं। लेकिन हकीकत में गांवों के हर कार्यकलाप पर केन्द्रीकृत नौकरशाही तंत्र का नियंत्रण बना रहता है।

विकेन्द्रीकरण एक जीवन दर्शन है। केन्द्र, राज्य, जिला और ग्राम स्तर पर स्वायत्ता को लाया जाना जरूरी है। जिला पंचायत, पंचायत समिति और ग्राम पंचायत की हैसियत यदि केन्द्रीकृत नौकरशाही की आज्ञाओं का पालन करना ही होगा। उनमें स्वायत्तता की भावना नहीं आएगी। सत्ता के सही जन प्रतिनिधि संस्थाओं के अधीन बनाना पड़ेगा। ग्राम सभाओं को इतने अधिकार देने पड़ेंगे कि वे पंचायतों पर गैर सरकारी अमले पर नियंत्रण रख सकें। जिस प्रकार केन्द्र सरकार संसद के प्रति जवाबदेह और राज्य सरकार विधानसभा के प्रति जवाबदेह है।

उसी प्रकार जिला और ग्राम स्तर की कार्यपालिकाएं (जिला परिषद, पंचायत समितियां और ग्राम पंचायतें) जनता की मिनी असंबेलियों अर्थात ग्राम सभाओं के आगे जवाबदेह होनी चाहिए। इन मिनी असंबेलियों को इतना अधिकार देने चाहिए कि वे कार्यपालिकाओं को अविश्वास प्रस्ताव पास कर भंग कर सकें और सरकारी तंत्र पर अपनी इच्छा को लागू कर सकें।